REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 9 | JUNE - 2024

बिलासपुर जिले में असहयोग आंदोलन एवं गाँधीवाद

डॉ. रीता बाजपेयी[1] , डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय[2]
[1]असिस्टेण्ट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान विभाग,डॉ.सी.वी.रमन विश्वविद्यालय,करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
[2]असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डॉ.सी.वी.रमन विश्वविद्यालय,करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सम्पूर्ण देश में रोलेक्ट एक्ट का विरोध किया गया उस समय बिलासपुर में नहीं पर शासन की ओर से बांध बनवाया जा रहा था। अतः यहाँ भी विरोध स्वरूप रतनपुर के बाबा पुरूषोत्तम दास ने मजदूरों को संबोधित करते हुये ब्रितानी दमनात्मक नीति का विरोध किया परिणाम हुआ कि कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी और परिस्थितियों का अव्यमन करने हेतु तत्कालीन मुख्य आयुक्त बिलासपुर को आकर समस्याओं पर चर्चा करनी पड़ी।

महात्मा गांधी ने देश में असहयोग आंदोनल प्रारंभ किया बिलासपुर में असहयोग आंदोलन रतनपुर से प्रारंभ हुआ एवं यहाँ के नवयुवक सदाशिवराम, हरपाल सिंह, पुरूषोत्तम दास, गोविंद प्रसाद, अमरनाथ गेंदराव एवं चमरू गिरफ्तार किये गये जिन्हें चार हजार रूपयों का अर्थ दंड दिया गया जिसका आधा भाग सदाशिवराम के परिवार से वसूला गया। मद्यपान बहिष्कार हेतु यहां धरने दिये गये। वकालत त्यागने वालों में बिलासपुर से ई. राघवेंद्र राव, एन. आर. खान खोजे, ठाकुर छेदीलाल, एवं डी. के. मेहता ने वकालत त्याग दी।

बिलासपुर में पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने कर्मवीर समाचार पत्र के माध्यम से छात्रों को स्कूल कालेज बहिष्कार की प्रेरणा दी। परिणाम स्वरूप बिलासपुर के त्रिभुवनलाल, भुवनलाल, मुरलीधर मिश्र, लक्ष्मण प्रसाद, पंचम सिंह आदि ने ब्रिटिश शालाये त्याग दी। इन छात्रों के अध्ययन की सुविधा हेतु पूरे देश के अनुरूप बिलासपुर में राष्ट्रीय विद्यालय खोला गया। यह राष्ट्रीय विद्यालय बद्रीनाथ साव के मकान में खोला गया स्व. पं. शिवदुलारे मिश्र इस विद्यालय का संचालन करते थे तथा बाबू यदुनंदन प्रसाद श्रीवास्तव यहां अध्यापन करते थे। नगर एवं ग्रामों में चरखे बांटे गये ताकि विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार हो एवं खादी का प्रचार हो, बिलासपुर में देवतादीन तिवारी ने स्वयं की खादी भंडार की दुकान खोली थी। नार्मल स्कूल रोड पर कैलाश सक्सेना ने स्वदेशी स्टोर्स खोला था। 1920 में गांधी जी ने रायपुर यात्रा की, उसमें बिलासपुर से बहुत से नागरिकों ने तिलक स्वराज्य फंड में योगदान दिया।

दिसंबर 1921 में रतनपुर क्षेत्रीय कांग्रेस की सभा हुई, वक्ताओं के देश प्रेम संबंधी भाषणों के कारण डी. एस. पी. सिमकिंस एवं जिलाधीश सोराब जी ने इस संबंध में श्री राव को बुलवाया तो श्री राव एवं पुलिस कप्तान में गार्मगर्म बहस हो गई। इस समय तक बिलासपुर में कांग्रेस के 14338 सदस्य बन चुके थे। देश में स्वराज्य पार्टी का गठन होने पर बिलासपुर के ई. राघवेन्द्र राव एवं बैरिस्टर छेदीलाल ने प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी छोड़कर स्वराज्य पार्टी का समर्थन प्रारंभ कर दिया।

छात्रों द्वारा स्कूल छोड़ना :

राजनांदगाँव में स्थापित राष्ट्रीय शिक्षण समिति के अध्यक्ष शिवदास डागा नियुक्त हुए। वैसे 1920 में ही यहां राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हो चुकी थी, लेकिन असहयोग के उद्देश्य से विधिवत 1921 में यह निर्मित

हुआ। 1921 में ही धमतरी में राष्ट्रीय विद्यालय निर्मित हुआ, इसका सारा व्यव–भार बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव कंडेल के मालगुजार ने, स्वयं अपने ऊपर स्वीकृत किया। आगे चलकर आर्थिक एवं तकनीकी परेशानियों के कारण इसे बंद करना पड़ा। फिर भी 1925 तक यह चलता रहा।

इस विद्यालय के संदर्भ में प्रत्यक्षदर्शी डॉ. शोभाराम देवांगन लिखते हैं– "1921 म सर्वप्रथम इस विद्यालय में श्री अजीजुरहमान बी.एस.सी., हबीबुर रहमान (इनके लघुभ्राता), एक महाराष्ट्रीयन श्री खुसके, श्री सेन तथा अन्य दो सज्जन बाहर से नियुक्त होकर आए। शेष अध्यापक स्थानीय व्यक्तियों से नियुक्त हुए थे जिनमें बिसाहू राव जी बाबर ने इस विद्यालय में 9 माह तक सेवा की। ये सभी अध्यापक अवैतनिक थे, बालचर एवं शारीरिक प्रशिक्षण का उन्हें पूर्ण ज्ञान था, ये सभी अध्यापक अवैतनिक थे।"

इसी वर्ष श्री सुंदरलाल भंडारी बिलासपुर आए, यहां उन्होंने विद्यार्थियों के महती सभी को अंग्रेजी शिक्षा की निःसारता एवं राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुए विद्यार्थियों को तत्काल विद्यालय छोड़ने की सलाह दी। अपने तेजस्वी व्यक्तित्व एवं ओजपूर्ण भाषण से उन्होंने जन सामान्य एवं छात्र जगत को प्रभावित किया। उन्होंने कहा था – इस अपमानजनक व्यवस्था को आप उस समय तक नहीं तोड़ सकते जब तक आप राष्ट्रीय शिक्षा ग्रहण नहीं करेंगे। सुंदर सिंह भंडारी के इस वक्तव्य से प्रभावित होकर 150 विद्यार्थियों ने नार्मल स्कूल छोड़ दिया, इनमें दुलार साय, मुरलीधर मिश्न आदि उल्लेखनीय हैं। इन विद्यार्थियों के लिये बिलासपुर (जूना बिलासपुर) में स्थित (वर्तमान कलकत्ता हॉटल) एक भवन में राष्ट्रीय विद्यालय चलाया गया। पं. शिवदुलारे मिश्र इस विद्यालय के संस्थापक थे एवं यदुनंदन प्रसाद श्रीवास्तव अपने तीन अन्य सहयोगियों के साथ इसमें पढ़ाया करते थे। कुछ ही दिनों में छात्रों की संख्या 500 हो गई।

राष्ट्रीय संस्थाओं का निर्माण :

असहयोग आंदोलन के अंतर्गत अंग्रेजी शाला का बहिष्कार करना था किन्तु छात्रों का नुकसान न हो इसके लिये उन शालाओं के बदले राष्ट्रीय विद्यालय खोलने का कार्यक्रम था। इसी के अनुरूप पूरे देश में राष्ट्रीय विद्यालय खोले जाने लगे। रायपुर में भी राष्ट्रीय विद्यालय प्रारंभ करने का कार्यक्रम बनाया गया तथा इसके लिये रायपुर में पांच फरवरी 1921 को एक जनसभा बुलाई गई, जिसके संचालक थे माधव राव सप्रे । इस सभा में दस हजार रूपये राष्ट्रीय विद्यालय के लिये इकट्ठे किये गये। इस विद्यालय के संचालक हेतु वामन राव लाखे मंत्री बनाये गये तथा स्थान की व्यवस्था की सेठ गोपीकिशन, बाल किशन एवं रामकिशन ने। इन्होंने इस हेतु एक भवन दिया, वहीं आज भी राष्ट्रीय विद्यालय, वर्तमान उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम के अनुरूप चल रहा है।

राष्ट्रीय विद्यालय में स्वावलंबी शिक्षा पर जोर दिया गया तथा छात्रों का उत्साह भी उल्लेखनीय है कि इस विद्यालय के प्रारंभ होने की सूचना पो ही राष्ट्रीय आंदोलन में सहयोग देते हुए नगर के दो सौ चालीस छात्रों ने अंग्रेजी विद्यालयों का बहिष्कार कर इसमें प्रवेश लेकर इसे प्रारंभ किया तथा इसमें अध्यापन एवं प्रधान की जिम्मेदारी लेने का गौरव प्राप्त किया जिले के जागरूक तहसील धमतरी ने वहां के पं. रामनारायण तिवारी ने असहयोग आंदोलन के दो सोपानों को अंजाम दिया एक तो वकालत त्याग दी, दूसरा रामपुर की इस राष्ट्रीय विद्यालय में प्रधान पाठक का महान दायित्व संभाला ।

राष्ट्रीय विद्यालयों में हिन्दी माध्यम से अध्यापन कार्य होना था तथा स्वावलंबी शिक्षा दी जाती थी यथा सूत कातना, कपड़ा बुनना, बढ़ई एवं लोहर के कार्य आदि भी यहाँ सिखाये जाते थे। धमतरी के आसपास के क्षेत्रों में भी असहयोग आंदोलन को व्यापक जनसम्पर्क एवं सहयोग मिल रहा था। नवयुवकों में विशेष उत्साह परिलक्षित हो रहा था, सिहावा नगरी के छात्रों ने नार्मल स्कूल रायपुर से अपना प्रशिक्षण कार्य बीच में ही त्यागकर अपने स्थान पर वापस आकर असहयोग आंदोलन में सक्रिय सहयोग देना प्रारंभ कर दिया तथा प्रचार कार्य भी प्रारंभ किया। उन्होंने कांग्रेस का सदस्य बनाना, मादक पदार्थ त्यागना लोगों को कार्यक्रमों की जानकारी देना आदि कार्य किये। साथ ही साथ तिलक स्वराज्य कोष हेतु क्षेत्र से धन संग्रह भी किया। इस प्रकार 1920 से 1922 तक वकालत त्यागना, उपाधियाँ त्यागना आदि कार्य यहां तेजी से प्रगति पर रहे। 1921 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं चक्रवती राजगोपालाचारी ने भी इस अंचल की यात्रा कर जनता का उत्साह वर्धन किया तथा कार्यक्रमों की जानकारी दी।

बिलासपुर में पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने कर्मवीर समाचार पत्र के माध्यम से छात्रों को स्कूल–कालेज बहिष्कार की प्रेरणा दी। परिणाम स्वरूप बिलासपुर के त्रिभुवनलाल, भुवनलाल, मुरलीधर मिश्र, लक्ष्मण प्रसाद, पंचम सिंह आदि ने ब्रिटिश शालाएँ त्याग दी। इन छात्रों के अध्ययन की सुविधा हेतु पूरे देश के अनुरूप विलासपुर में राष्ट्रीय विद्यालय खोला गया यह राष्ट्रीय विद्यालय बद्रनाथ साव के मकान में खोला गया एवं पं. शिवदुलारे मिश्र इस विद्यालय का संचालन करते थे तथा बाबू यदुनंदन प्रसाद श्रीवास्तव यहां अध्यापन करते थे।

नगर एवं ग्रामों में चरखे बांटे गये ताकि विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार हो एवं खादी का प्रचार हो बिलासपुर में देवतादीन तिवारी ने स्वयं की खादी भंडार की दुकान खोली थी। नार्मल स्कूल रोड पर कैलाश सक्सेना ने स्वदेशी स्टोर्स खोला था।

1920 में गांधी जी ने रायपुर यात्रा की उसमें बिलासपुर से बहुत से नागरिकों ने तिलक स्वराज्य फंड में योगदान दिया। दिसंबर 1921 में रतनपुर क्षेत्रीय कांग्रेस की सभा हुई, वक्ताओं के देशप्रेम संबंधी भाषणों के कारण डी. एस. पी. सिमकिस एवं जिलाधीश सोराब जी ने इस संबंध में श्री राव को बुलवाया तो श्री राव एवं पुलिस कप्तान में गर्मागर्म बहस हो गई।

इस समय तक बिलासपुर में कांग्रेस के 14338 सदस्य बन चुके थे। देश में स्वराज्य पार्टी का गठन होने पर बिलासपुर के ई. राघवेन्द्र' राव एवं बैरिस्टर छेदीलाल ने प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी छोड़कर स्वराज्य पार्टी का समर्थन प्रारंभ कर दिया ।

वकीलों का बहिष्कार :

नागपुर कांग्रेस अधिवेशन से अब इस क्षेत्र के नेता वापस आये तो उन्होंने असहयोग आंदोलन कार्यक्रम का यहाँ बड़ी तीव्र गति से प्रचार–प्रसार प्रारंभ किया तथा इसके विभिन्न कार्यक्रमों के आधार पर रायपुर में ठाकुर प्यारेलाल सिंह एवं पं. रामनारायण तिवारी ने वकालत छोड़ दी। जिला कौंसिल के सदस्य यादव राव देशमुख ने इस कीसिल की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। लोगों ने बड़ी संख्या में अंग्रेजों द्वारा दी गई उपाधियों एवं पद्वियों का परित्याग करना प्रारंभ किया। जिनमें प्रमुख व्यक्तियों ने जिन्हाने पद्वियां त्यागी इस प्रकार थे – बैरिस्टर कल्याण जी मोरारजी थेकर तथा सेठ गोपी किशन ने अपनी राम साहब वाली उपाधि त्याग दी तथा काजी शमशेर खान ने अपनी खान साहब वाली उपाधि त्याग दी। जनता में इनका एवं इनके इन कार्यो का उत्साह से स्वागत किया। वामन राव लाखे को एक सार्वजनिक सभा में इस कार्य के कारण स्वागत करके जनता ने 'लोकप्रिय' की उपाधि से सम्मानित किया। असहयोग आंदोलन के ही एक अन्य कार्यक्रम चुनाव बहिष्कार में यहाँ हुकूमत के बार–बार चुनाव कराने की घोषणा करने के बाद भी व्यक्ति चुनाव लड़ने हेतु खड़ा नहीं हुआ बल्कि इसके विपरीत यहां धमतरी, महासमुंद क्षेत्र से निर्विरोध चुनकर गये धमतरी के बाजीराव कृदत्त ने आंदोलन को समर्थन देते हुए त्यागपत्र दे दिया।

धमतरी तहसील में छात्रों ने भी इस असहयोग आंदोलन में उल्लेखनीय कार्य किये। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मंगऊराम नेताम के अनुसार बिसाहू राव बाबर जो नागपुर महाविद्यालय में प्रति वर्ष में अध्ययनरत थे तथा शंकर राव हिषीकर जो नागपुर मेडिकल कालेज में द्वितीय वर्ष के छात्र थे एवं खुशाल राव पवार इन तीनों छात्रों ने अपना अध्ययन छोड़कर आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने का गुरूतर कार्य प्रारंभ किया। तत्कालीन धमतरी तहसील कांग्रेस कमेटी के मंत्री की सूचना के अनुसार रामपुर जिले में प्रमुख कार्यकर्ता इस प्रकार थे– बैरिस्टर सी. एम. ठक्कर, सभापति कांग्रेस कमेटी तथा पं. रविशंकर शुक्ल मंत्री कांग्रेस कमेटी एवं अन्य सदस्य इस प्रकार थे – पं. बामन बल्लीराम लाखे, पं. माधवराव सप्रे, पं. रामदयाल तिवारी, पं. सुंदरलाल शर्मा, पं. नारायण राव मेघावाले, पं. लक्ष्मण राव उदगीरकर, नत्थूजी जगताप, सेठ शिवदास डागा, बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव, महंत लक्ष्मीनारायण दास, गोपाल दास डागा, शंभूदयाल तालुकेदार, उजियार लाल सक्सेना, सेठ गोपी किशन, सठ बाल किशन एवं सेठ प्रभुलाल आदि।

रायपुर जिले में इस असहयोग आंदोलन में केवल दो महिनों में ही 64450 पर्च बांट दिये गये। यहां इस आंदोलन की सक्रियता एवं उत्साह का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि अप्रेल 1921 तक देश के प्रथम श्रेणी के नेताओं ने यहां आकर अचल का उत्साह देखा एवं रायपुर में गांधी चौक में जनता को संबोधित करके उनका उत्साह द्विगुणित किया। इन प्रथम श्रेणी के नेताओं में जिन्होंने रायपुर में आकर भाषण दिया वे थे 'भारत के अंग्रेजी राज्य' के लेखक तपस्वी पं. सुंदरलाल शर्मा, सेठ गोविंद दास, मौलाना कुतुबुद्दीन, सेठ जमना

लाल बजाज एवं पं. विष्णुदत्त शुक्ला जिले की सभी तहसीलों में गांव में आंदोलन के प्रचार केन्द्र बनाये गये थे। ये केन्द्र इस प्रकार थे– धमतरी तहसील में धमतरी, कंडेल, कुरूद, मेधा, सिहावा, नगरी, रूद्री, नवागांव, लमकेनी आदि।महासमुंद तहसील में महासमुंद, राजिम, तुमगांव, बेलसोड़ा आदि। बलौदाबाजार तहसील में भाटापारा, सिमगा, बलौदाबाजार, पलारी, भटगाँव, सिरपुर आदि।

1920 के कलकत्ता कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में गांधी जी ने अपना प्रस्ताव पारित करते हुये कहा कि अंग्रेजी सरकार से सहयोग संभव नहीं है। बिना स्वराज्य के पंजाब (जलियावाला बाग) और खिलाफत की भूलों की पुनरावृत्ति को रोका नहीं जा सकता। इस अधिवेशन के बाद गांधी जी ने पूरे भारत में असहयोग आंदोलन का जबरदस्त प्रचार किया। जनता में नई चेतना का संचार कर उसे संघर्ष की प्रेरणा दी।

पूरे देश में यह आंदोलन प्रखर हो उठा। छत्तीसगढ़ अंचल ने भी इससे कंधे से कंधा मिलाया और यहां इस आंदोलन का श्रीगणेश रायपुर जिले की सर्वाधिक जागरूक तहसील धमतरी के कण्डेल ग्राम सत्याग्रह से हुआ। राष्ट्रीय आंदोलन के इस असहयोग वाले सोपान में धमतरी तहसील का नाम पूरे देश में गौरवपूर्ण कार्य हेतु याद किया जायेगा।

1914 में ये भारत वापस न आयें, इन्होंने बिलासपुर में लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाली संस्थाओं की स्थापना में योगदान देते हुये सेवा समिति की स्थापना की। गांधी जी द्वारा प्रारंभ असहयोग आंदोलन के अंतर्गत इन्होने वकालत त्याग दी एवं अंचल में स्वदेशी प्रकोप एवं विदेशी बहिष्कार का प्रचार किया। प्रांत में राष्ट्रीय विद्यालयों में भी इनका योगदान रहा है, प्रांत के सभी राष्ट्रीय विद्यालयों पर नियंत्रण रखने हेतु एक राष्ट्रीय शिक्षा मंडल गठित किया गया, जिसके तीन निर्वाचित सदस्या में दो बिलासपुर के ई. राघवेन्द्र राव एवं ठाकुर साहब थे।

चरखा कातना :

गांधी भारत के नष्टप्राय उद्योगों, साथ ही लंकाशायर तथा मेनचेस्टर की मिलों से निर्मित ऊँची–ड्यूटी लगे वस्त्रों के आयात से क्षुब्ध थे। उनका विश्वास था कि जब तक विदेशी वस्त्रों का आयात बन्द नहीं होगा, भारत आत्मनिर्भर नहीं हो सकता। अतः उन्होंने पुनः हाथ के बुने कपड़े की उन्नति का अमोघ वस्त्र खादी बनाया। वे मशीन से निर्मित वस्तुओं को अनीतिपूर्ण मानते थे क्योंकि गांधी मशीन को महत्व न देकर जो भारत के नैतिक उन्नति में बाधक है, श्रम को महत्व देते हैं।

खादी तथा अन्य ग्रामोद्योगों से करोड़ों बेकार लोगों को काम मिलता है। यह एक ऐसा सरल और सस्ता व्यवसाय है, जिसे देश के हर समुदाय के व्यक्ति कर सकते हैं तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने देश की, गांव की आम जनता की मेहनत और बुद्धि से बनी वस्तुओं से पूरा कर सकते हैं।

किसानों के पास खेती के अतिरिक्त और कोई काम नहीं रहता। अतएव खेती के बाद के लगभग छः महीने बेकार रहते हैं। खादी का काम कपास बोने से, सूत बुनने तथा तैयार करने तक होता है। इस काम के लिये किसान को अपने परिवार सहित पूरे वर्ष के लिये काम मिलता रहता है, जिससे बेकार की समस्या का निदान भी हो जाता है तथा देश की आय में भी वृद्धि होती है। इन्हीं विचारों को केन्द्र में रखकर गांधी ने खादी को राष्ट्रीय व्यवसाय बनाया, इसके लिये उन्होंने अपने पत्र हिन्दी नवजीवन के माध्यम से भारतवासियों को सन्देश दिया कि – "स्वतः सुख की यह प्रवृत्ति व्यक्तिमात्र की महत्वपूर्ण मानसिक विशेषता है, इसी के कारण हम मनुष्य और पशु के बीच के भेद को भली–भांति समझ सकते हैं, इस भेद को बताने का यह एक मुख्य साधन है। मैं चर्खे पर विशेष रूप से जोर देता हूँ क्योंकि उसका क्षेत्र अधिक व्यापक और विशाल है। आज देश में चर्खे का दुहरा उपयोग है, इस कारण हमारे एक अत्यंत उपयोगी और सम्माननीय धन्थे का पुनरूद्धार होगा और हमारी आर्थिक दशा सुधरेगी, सुदृढ़ होगी।'

गांधी के इस प्रयास से खादी प्रसार के लिए 'अखिल भारतीय चर्खा संघ' की स्थापना हुई। सन् 1940 की रिपोर्ट ने यह सूचित किया कि 13,450 गांवों के 2,75,000 कतैयों और बुनकरों द्वारा 95,51,478 वर्ग गज खादी का उत्पादन हुआ। इसके व्यापक प्रचार एवं प्रसार को दृष्टि में रखकर पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है "सर्वे जनः सुखिनो भवन्तु' के आदर्श को एक बार फिर लोगों में संचरित किया जा रहा है। इस उउदेश्य की प्राप्ति के लिए गांधी जी ने शारीरिक श्रम और उसके आदर्श स्वरूप सूत कातने के सिद्धांत का प्रचार किया है और प्रत्येक पुरुष, स्त्री तथा बच्चे के लिये समान रूप से कताई को दैनिक यज्ञ निर्धारित किया है। उन्होंने इस

प्राचीन भूमि की जनसंख्या के बल में एक ऐसे धन का शक्ति स्रोत ढूढ़ निकाला है जो सारे संसार में अभूतपूर्व है। वह वास्तव में ऐसा शक्ति स्रोत है जो व्यापार के संतुलन, विक्रय क्षेत्र, साम्राज्यवाद, सैनिकवाद, विनिमय व मुद्रा के दर की घटती व बढ़ती तथा वैज्ञानिक आविष्कारों और अनुसंधानों पर निर्भर नहीं करता। यंत्रों की प्रतिस्पर्धा में इन प्रबल शक्ति के साधनों को खतरे में नहीं डाल सकती क्योंकि वे सादा जीवन पर अवलम्बित होते हैं। इनके अतिरिक्त – ऊँच–नीच के भेद का नाश होना तो खादी का एक महान् फल है।

गांधी की इस घोषणा से कि – "मैं दावे के साथ कहता हूँ कि आत्म–शुद्धि और चरित्र संगठन के क्षेत्र में इस नन्हें से चखें का बड़ा प्रभुत्व है।" खादी का प्रचार देश भर में तेजी से फैल गया। असंख्य नर–नारी अपने अमूल्य विदेशी वस्त्रों का परित्याग करके खादी वस्त्र धारण करने में अपना गौरव समझने लगे। खादी अब राष्ट्रीय जीवन का एक आवश्यक अंग बन गई। इस प्रयास से जहां एक ओर आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ वहां दूसरी ओर राजनीतिक चेतना को पर्याप्त बल मिला।

(7) अन्य कार्य :

शासकीय शालाओं का बहिष्कार करते हुए पूर्व निश्चित कार्यक्रमों के अनुसार 'राष्ट्रीय विद्यालय' देश में खोले जाने लगे। 5 फरवरी 1921 को रायपुर में एक जनसभा हुई, जिसका संचालन श्री एम. आर. सप्रे ने किया। इस सभा में रायपुर के प्रमुख नागरिकों ने भाग लिया। इसी सभा में राष्ट्रीय शाला की स्थापना हेतु दस हजार की धनराशि एकत्र हुई। सेठ गोपी किशान दास जी, बाल किशान एवं रामकिशन जी ने मिलकर शाला हेतु विशाल भवन दिया (जो आज भी उस शाला के पास है)। विद्यालय की संचालन समिति के मंत्री वामन राव जी लाखे चुने गये। विद्यालय के खुलते ही छात्रों ने अभूतपूर्व उत्साह दिखाया एवं असहयोग आंदोलन को सहयोग देते हुए अंग्रेजी शालाओं का बहिष्कार करते हुए 240 छात्रों ने इसमें प्रवेश लेकर इसे प्रारंभ किया। धमतरी के वकील पं. रामनारायण जी तिवारी ने वकालत त्यागकर इस शाला के प्रधानपाठक का गुरूतर भार वहन किया। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा का प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय कार्य असहयोग आंदोलन के द्वारा इस क्षेत्र में भी प्रारभ हुआ। इससे विद्यार्थी स्वावलम्बी बन सके ।

राष्ट्रीय विचारधारा से ओत–प्रोत धमतरी तहसील भी शिक्षा के इस पावन कार्य से अछूती कैसे रहती ? वहां भी राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना का वातावरण बना। पूरे देश में छः माह में ही असहयोग आंदोलन अपने उत्कर्ष की सीमा पर पहुंच चुका था। धमतरी में हाई स्कूल के नाम से मेनानाइट मिशन द्वारा संचालित एक ही विद्यालय था। तहसील के देश प्रेमी छात्रों ने तय किया कि अब वे राष्ट्रीय शिक्षा ग्रहण करेंगे एवं देश के स्वाधीनता संग्राम में भी हाथ बटायेंगे। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु छात्रों में तहसील के कांग्रेसी नेताओं से सम्पर्क करने बार–बार राष्ट्रीय विद्यालय स्थापना की मांग की। यह मांग ढलती रही, किन्तु तहसील का सौभाग्य कि उसे बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव जैसे कर्मठ देशभक्त और राष्ट्रप्रेमी मिला। बाबू साहथ (छोटे लाल) ने अंत तक जुलाई 1921 में अपने ही भवन में स्वयं के खर्च से अंततः राष्ट्रीय माध्यमिक विद्यालय की नीव डाल दी। इस तरह बाबू साहब ने केवल राष्ट्र की तत्कालीन मांग एवं आवश्यकता की पूर्ति करने में सहायक हुये, बल्कि स्वाभिमानी छात्रों के स्वाभिमान की मर्यादा को भी बनाये रखने में सहायक हुये।

इस विद्यालय में पहली अंग्रेजी (पांचवी) से मैट्रिक तक की शिक्षा का प्रबंध था। बाबू साहब स्वयं अवैतनिक शिक्षक बने तथा अन्य नौ शिक्षक नियुक्त किये। यद्यपि शिक्षकों को कम वेतन मिलता था किन्तु पूरा खर्च बाबू साहब के स्वतः के कोष से होता था। जुलाई 1921 में अजीजुर्रहमान (बी.एस.सी.) प्रधान अध्यापक, इनके छोटे भ्राता हबीबुर्रहमान, कसरे, सेन आदि इस शाला में शिक्षक नियुक्त हुए। धमतरी के ही बिसाहू राव बाबर 9 माह अवैतनिक शिक्षक रहे।

इस शाला के छात्र चूँकि राष्ट्रप्रेम से अभिभूत थे और इसी उद्देश्य से इसकी स्थापना भी हुई थी। अतः अध्ययन के बाद देश के स्वतंत्रता आंदोलन में शांतिमय धरना (पिकेटिंग) आदि जो विदेशी बहिष्कार एवं मद्य निषेध हेतु शराब दुकानों में धरना देने का कार्य करना पड़ता था। उसमें देश भक्तों के कन्धे से कन्धा मिलाकर वे स्वतः सहयोग करने लगे। इसी का परिणाम था कि शराब, अफिम आदि के ठेकेदार भविष्य में ठेका लेने की हिम्मत नहीं जुटा सके। असहयोग आंदोलन में यह एक सफल कदम इन छात्रों के प्रयासों का प्रतिफल था।

इस विद्यालय में यहीं से उत्तीर्ण छात्रों ने भी शिक्षक का कार्य किया। 1922 में श्री विनायक राव एवं सूरजपाल गुप्ता नियुक्त हुए जो यहीं से उत्तीर्ण हुए थे। अल्प वेतन एवं देश प्रेमियों की कठिन अवस्था के कारण

यह संस्था बड़ी कठिनाईयों से चल रही थी। यह जब तक चली इसके परीक्षा परिणाम बड़े उत्साहवर्धक रहे। इसकी परीक्षाएँ जबलपुर राष्ट्रीय शिक्षा समिति द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम के आधार पर की जाती थी।

कठिन परिस्थितियों तथा शिक्षकों के इतीफे एवं नई नियुक्तियों के कारण 1924 में रायपुर के प्रसिद्ध देशभक्त नेता ठाकुर प्यारेलाल सिंह ने (जिन्होंने अपनी वकालत, असहयोग आंदोलन के अंतर्गत त्याग दी थी) इसके प्राधानाध्यापक का गुरूतर भार वहन किया तथा छः माह तक यह भार उन्होंने अवैतनिक रहकर उठाया।

अर्थाभाव के कारण अकेले बाबू साहब इनका खर्च कहा तक उठा सकते थे ? उन्हें आशा थी कि लोग इसे आर्थिक सहायता प्रदान करेंगे किन्तु लगातार निराश होकर उन्हें अंततः अक्टूबर 1924 के आसपास आर्थिक तंगी के कारण मजबूरन इस सस्था को बन्द करना पड़ा। इस शाला ने अच्छे परिणाम एवं कर्मठ युक तहसील को दिये। इसी संस्था से आजादी के दीवाने डॉ. शोभाराम देवांगन 1924 में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए । सत्याग्रही रामगोपाल जी चौबे का भी अध्ययन यहीं हुआ।

दुर्भाग्य से रायपुर का राष्ट्रीय विद्यालय भी अब जीर्ण अवस्था में है। इन विद्यालयों ने देश के स्वातंत्र्य संग्राम में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इसमें शिक्षा का माध्यम हिन्दी था तथा सूत कातना, कपड़ा बुनना, लोहारी, बढ़ईगिरी आदि स्वावलम्बी बनाने वाली शिक्षाओं का भी प्रावधान था। 1920 से 1922 के मध्य इस क्षेत्र की जनता को असहयोग आंदोलन के अंतर्गत क्षेत्र के अनेक लोगों ने अपनी उपाधियों को त्यागर मानसेवी न्यायाधीश के पदों को त्यागकर वकालत छोड़कर सहयोग किया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं सी. राज गोपालाचारी ने 1921 में छत्तीसगढ़ भ्रमण करके इस क्षेत्र की जनता को प्रोत्साहन एवं प्रेरणा दी है।

सन्दर्भ सूची :

1. शर्मा, रामगोपाल : छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन (1857–1947), पृष्ठ 44.
2. देवांगन, शोभाराम : 'वही, पांडुलिपि (अप्रकाशित)
3. शर्मा, अरविंद, छत्तीसगढ़ का राजनीतिक इतिहास, शोध प्रबंध (1983) पर आधारित, पृष्ठ 116.
4. शर्मा, रामगोपाल : छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन, पृष्ठ 42, 43.
5. शर्मा, रामगोपाल : छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन, पृष्ठ 136.
6. वही, पृष्ठ 137.
7. शर्मा, रामगोपालः छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन, प्रथम संस्करण 1994, पृष्ठ 41, 42.
8. शर्मा, रामगोपालः छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन, 1857–1947, प्रथम संस्करण 1994, पृष्ठ 35, 125.
9. पट्टाभि, सीतारमैयाः कांग्रेस का इतिहास, भाग–4, पृष्ठ 351.
10. गांधी, माहनदास करमचन्द रचनात्मक कार्यक्रम, पृष्ठ 16.
11. गांधी, मो.क.: हिन्दी नवजीवन, पृष्ठ 16, 29 अगस्त 1929.
12. ठाकुर, हरिः स्वाधीनता आंदोलन में रायपुर नगर का योगदान, पृष्ठ 33.

डॉ. रीता बाजपेयी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान विभाग (इतिहास),
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)